Bodhi-Path Year 2020 July Issue Volume 19 Page No 55-60

विश्व शांति एवं अध्यात्म चिंतन का मार्ग : बौद्ध धर्म

सर्वेष कुमार
शोध छात्र, पालि विभाग,
नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार
Email-Id: - sarvesh993419@gmail.com
Mob-No: - 9934190056

छठी शताब्दी ईसा पूर्व मानव समाज में आध्यात्मिक असंतोष और बौद्धिक उथल–पुथल के रूप में जाना जाता है। उसी समय चीन में लाओ–त्से और कन्फ्यूषियस एवं यूनान में परमेनाइडीस और एंपेडोकल्स, ईरान में जरथुस्त्र और भारत में महावीर और बुद्ध जैसे कई सुविख्यात आचार्य का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने अपनी सांस्कृतिक धरोहर ध्यान–साधना का मार्ग (अध्यात्म) पर चितंन किया तथा समाज में नए दृष्टिकोण विकसित किए।

बौद्ध धर्म वैदिक कर्म–काण्ड, भोग–विलास, ऊँच–नीच, पाखण्ड की भावनाओं से उपर उठकर समतामूलक एवं व्यवहारिकता को अपना कर इस धरातल पर मानव के दुःख दर्द को लेकर विवेचन किया गया है। इस धर्म दर्षन में सभी स्थलों पर भाग्यवाद का खण्डन और कर्मवाद का मण्डन किया गया है। यह धर्म नैतिक नियमों पर आधारित सार्वभौम धर्म माना गया है। जिसमें ईष्वर के लिए कहीं कोई स्थान नहीं है। इस धर्म संस्कृति में समन्वयवादी विचारों की प्रधानता है। प्राचीन भारतीय धर्म दर्षन के सम्पूर्ण वाड्मय में बुद्ध एक ऐसे चिन्तक हुए जिसने प्रचलित विचारधारा एवं चिंतन के विपरीत एक नई दिषा प्रदान किया। बुद्ध का अनात्मवाद उद्देष्यपूर्ण है तथा उनके समाजवादी, मानवतावादी और समतावादी विचार बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय पर आधारित है।

धार्मिक और आध्यात्मिक आंदोलन का प्रवर्तन करने वाला भगवान बुद्ध अपनी वैयक्तिक आध्यात्मिक अनुभूति को जन–जन तक पहुँचाने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को मनुष्य के हित, सुख एवं कल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

बुद्ध के संम्पूर्ण जीवन को दो पक्षों के रूप में माना गया है :– एक वैयक्तिक और दूसरा सामाजिक। जो सुपरिचित बुद्ध प्रतिमा है वह एक तपस्यारत, एकाग्र और अंतर्मुखी

साधु की, योगी की प्रतिमा है, जो कि आंतरिक समाधि के आनंद में लीन है। यही परंपरा थेरवाद बौद्ध धर्म और अषोक के धर्म–प्रचारकों से संबद्ध है। उनके लिए बुद्ध एक मनुष्य है, गुरू हैं, उद्धारकर्ता और देवता नहीं। बुद्ध के जीवन का दूसरा पक्ष यह बताता है, कि वह मनुष्य मात्र के दुख से पीड़ित जीवन में प्रवेष करना, उनके कष्टों का निदान करना और 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' का संदेष जन–जन तक पहुचाना उनके जीवन का दूसरा पक्ष है। मानव मात्र के प्रति करूणा पर आश्रित यह दूसरी पक्ष उत्तर भारत में कुषाणों (70 से 480 ईसवी) और गुप्त वंष (320–650 ईसवी) के काल में खूब पल्लवित–पुष्पित हुई। बुद्ध के यह मुक्ति का मार्ग, श्रद्धा व अनुषासन के बल पर पुरे विष्व में सबके के लिए समान रूप से विकसित हुआ।

बौद्ध धर्म भारत से बाहर दुनिया के बहुत सारे हिस्सो में जैसे–जैसे फैला वैसे–वैसे कुछ विभिन्नताएं बढ़ती गई। जिसमें पहली परंपरा आज भी वर्तमान समय में श्रीलंका, बर्मा और थाईलैण्ड में प्रचलित है, और दुसरी परम्परा नेपाल, तिब्बत, कोरिया, चीन और जपान आदि देषों में शांति और सद्भावना का संदेष प्रदान कर रहा है।

बुद्ध हमेसा ऐसा आध्यात्मिक अनुभव चाहते थे, जिसमें सारी स्वार्थ–भावना नष्ट हो जाए और साथ ही साथ भय और वासना भी समाप्त हो जाए। 'अध्यात्म' वह परम आंतरिक शांति की मनोदषा है, जिसके साथ ही यह निष्ठा भी है कि आध्यात्मिक स्वतंत्रा पा ली गई है, यह केवल वही उसे जान सकता है, जिसने उसका अनुभव किया हो। आध्यात्मिक साधना के मार्ग में प्रगति की विभिन्न अवस्थाओं के लिए आख्याभेद प्राचीनतम संदर्भो में स्पष्टतः उपलब्ध नहीं होता। प्रारम्भ में कदाचित् पृथग्जन, आर्य एवं अर्हत् की ही चर्या थी त्रिपिटक में अनागामी शब्द के अपरिभाषित प्रयोग की उपलब्धि इसे प्रमाणिक करती है कि मार्गचतुष्टय का सिद्धान्त सर्वथा प्राचीन नहीं है। श्रामण्यफल सूत्र में भी मार्गों एवं मार्गफलों के चतुष्टय की चर्या प्राप्त नहीं होती है। किन्तु पृथग्जन एवं आर्य का भेद अत्यन्त प्राचीन प्रतीत होता है। मज्झिम निकाय में पृथग्जन उस पुरूष को कहा गया है जो कि अहंकार तथा ममकार के मोह में फसा हो। इस मोह के कारण वह अनात्म पदार्थों में आत्मग्राही रहता है एवं काम, भव और अविधा के आस्त्रवों से प्रेरित होकर कर्म करता है। अंगुत्तर निकाय एवं पुग्गल–प"ञत्ति में पृथग्जन के अनन्तर गोत्रभू की अवस्था भी कही गई है। इन गन्थों में गोत्रभू को आर्य नहीं माना है। कुछ अन्य परवर्ती ग्रन्थों में, जैसे कि

पटिसंमिदामग्ग और अभिधम्मत्थसंगहो में, गोत्रभू को आर्य माना गया है। बुद्धघोष ने भी मार्ग ज्ञान के बाद ही गोत्रभू–ज्ञान माना है। स्त्रोतआपत्ति का अर्थ है कि पुरूष निवृति की ऐसी आध्यात्मिक धारा में पहुँच गया है जो उसे अनिवार्य रूप से सम्बोधि तक ले जायेगी। इसीलिए स्त्रोतआपन्न के लिए सात से अधिक जन्म शेष नहीं रहते। जब केवल एक ही शेष रहता है तब वह सकृदागामी कहलाता है। स्त्रोतआपन्न एवं सकृदागामी शील की परिपूर्ति करते हैं। जब इस लोक में पुनरागमन शेष नहीं रहता तब वह अनागामी की अवस्था कहलाती है। अनागामी समाधि की परिपूर्ति करता है। प्रज्ञा के द्वारा सर्वथा आश्रवक्ष्य होने पर अर्हत्व की प्राप्ति होती है। प्रारम्भ में अर्हत् और बुद्ध का भेद स्पष्ट नहीं था, पर बाद में न केवल यह भेद विषद हुआ अपितु कुछ सम्प्रदायों में अर्हत् का पर्याप्त अपकर्ष घोषित किया गया।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मुक्ति मार्ग में प्रवेष की अवस्थाओं का विवेचन क्रमषः सूक्ष्म और विस्तृत हुआ। पृथग्जन और आर्य का भेद प्राचीनतम था। पीछे इन दो के अन्तराल में 'गोत्रभू' की स्थिति कल्पित की गयी तथा आर्यत्व के विकास में स्त्रोतापत्ति से अर्हत्व तक चार मार्ग एवं उनके अनुरूप चार फल माने गये। उनमें भावना एवं विपष्यना के तारतम्य से अवान्तरभेद भी स्वीकार किये गये। महायान में आध्यात्मिक विकास की अवस्थाओं का और भी सूक्ष्म और विस्तृत चिन्तन हुआ। आध्यात्मिक विकास की चौथी एवं अंतिम अवस्था 'अर्हत' पद है। पालि में 'अर्हत' शब्द बहुत ही व्यापक है। वह सम्पूर्ण आध्यात्मिक साधना का केन्द्र बिन्दु है। इस प्रकार भगवान बुद्ध ने मनुष्य को अध्यात्म चिंतन एवं मुक्ति का मार्ग बतलाये है।

बौद्ध धर्म के विषय में प्रायः एक भ्रान्ति लोगों के मन में हमेषा बनी रहती है की बौद्ध धर्म एकमात्र ऐसे धर्म है, जो हमें अन्य धर्मों के विपरीत आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है। जबकि वास्तविकता यह है कि बौद्ध धर्म मानव जीवन के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में लोक–कल्याण की दीक्षा देता है। बौद्ध धर्म विष्व के सभी धर्मों में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इस धर्म ने मानव में लोक–कल्याण की भावना को जन्म दिया और विष्व शांति एवं आध्यात्म के मार्ग को प्रषस्त करता है।

बौद्ध धर्म विष्व में शांति के लिए एक महान शक्ति सिद्ध हुआ है। भगवान बुद्ध की शांति आत्म–बलिदान, करूणा और उदारता संबंधी नीति धम्मपद की इन पंक्तियों में प्रतिध्वनित हुई है :–

न हि वेरेन विरानि, सम्मनतीघं कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो।।[1]

इस संसार (लोक) में वैर से वैर कभी शान्त नहीं होता अपितु अवैर से वैर शान्त होता है–यही सनातन धर्म है। धम्मपद में निवैंरता को सनातन धर्म माना गया है। यह भावना आज भी किसी न किसी रूप में हमें देखने को मिलता है आज भी हमारे अपने देष या पड़ोसी देष से विवाद होता है तो सर्वप्रथम हमारे देष शांतिपूर्ण ढंग से विवादों सुलझाने का प्रयास करता है, क्योंकि कि वैर से वैर कभी शांत नहीं हो सकता। अगर विवाद को सिर्फ युद्ध द्वारा सुलह का प्रयास किया जायेगा तो एक दिन ऐसी अवस्था आऐगी जिसमें सब कुछ मिट जायेगा, धरती का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा तो फिर वैसा युद्ध करने का क्या मतलब होगा। जिसमें सब कुछ समाप्त हो जाए। आज हमारे वर्तमान प्रधान मंत्री भी यही कहते हैं कि हम उस देष से आए है जहां युद्ध नहीं बुद्ध (षांति) की धरती है। आज भी हमारे देष किसी भी प्रकार के मुद्दा को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने में दृढ़ विष्वास रखता है। क्योंकि बुद्ध की ऐसी धर्म देषना है जो दानव को मानव बना देती है। मानव को मानवता का षिक्षा देती है। ब्रह्मविहार (मैत्री, करुणा, मुदिता उपेक्षा) आज भी भारत के कण–कण में विराजमान हैं।

आज अगर भारत एक राष्ट्र के रुप में तथा राजनीति एकता के रुप में संगठित है तो इसका श्रेय बौद्ध धर्म को जाता है। बुद्ध ने हमेषा से यही संदेष दिया है कि अपने दुष्मनों पर वार करो परंतु याद रहे कि पहला वार तुम्हारा न हो और आज भी हम यही नीति अपनाते हैं। आज मानव में पुनः कई सामाजिक कुरीतियां उत्पन्न हो चुकी है, जो हमारे देष को विनाष के कागार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इस विकट परिस्थिति में बुद्ध की षिक्षा, अहिंसा का मार्ग के माध्यम से ही भारत की राष्ट्रीय प्रकृति को शांतिपूर्ण बनाने में मदद करेगा। भगवान बुद्ध के देषनाओं में अनेक ऐसे उपदेष समाहित है, जो

मनुष्य को बुरे (अकुषल) कर्मों को करने से रोकता है और सत्य (कुषल) कर्मों को करने का षिक्षा प्रदान करता है। जिसका उदाहरण कुछ इस प्रकार है :–

सब्ब पापस्स अकरंण, कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्तपरियोदपनं एतं बुद्धान सासनं।।[2]

अर्थात् :– सभी पाप (अकुषल) कर्मों का न करना और सभी कुषल कर्मों का संचय करना, तथा चित्त की पवित्रता बनाये रखना ही बुद्ध का शासन है।

भगवान बुद्ध ने मनुष्य को मध्यम मार्ग अपनाने पर जोर देकर हर कठिन परिस्थितियों से मुकाबला करने का उपाय बतलाया है। साथ ही उन्होंने अपनी देषनाओं में यह भी जोड़ा है की मेरी बात को कोई इसलिए चुपचाप मत मानो क्योंकि उसे मैंने कहा है। पहले आप उसे विविध परीक्षाओं द्वारा उसकी परीक्षण करो। जीवन की कसौटी पर उन्हें परखो, और अपने अनुभवों से मिलान करो। यदि तुम्हें सही जान पड़े तो उसे स्वीकार करो अन्यथा छोड़ दो। इस प्रकार देषना करते हुए भगवान बुद्ध कहते है की मैं तो सिर्फ मार्ग बतलाता हूँ, मार्ग पर चलना तो तुम्हें स्वयं पड़ेगा। सत्य मार्ग पर चलने से तृष्णाओं से मुक्ति मिल जायेगी। समस्त दुःखो का नाष हो जायेगा। क्योंकि तृष्णा ही समस्त दुःखों की जननी माना गया है। इसलिए बुद्ध कहते हैं की मैं मार्ग दाता हूँ मोक्ष दाता नहीं।

तुम्हेहि किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झायिनो मारवन्धना।।[3]

अर्थात् :– 'तपना (ध्यान–साधना करना) तो तुम्हें ही पड़ेगा, तथागत तो सिर्फ मार्ग बताने वाले हैं। इस मार्ग पर चलने वाले ही मार–बन्धनों से मुक्ति पाते है। भगवान बुद्ध की इस प्रकार देषनाओं से स्पष्ट होता है की मनुष्य को किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, उसे अपने आप पर निर्भर रहकर आत्म विष्वास द्वारा कार्य करना चाहिए कोई शक्ति, ईष्वर परमेष्वर उसे दुःख से मुक्ति नहीं दिला सकती है।

''अत्ता ही अत्तनो नाथों, कोहि नाथों परो सिया।
अत्ता ही सुदन्तेन, नाथं लभति दुल्लभं''।।[4]

अर्थात् :– मनुष्य अपना स्वामी स्वयं है, कोई दूसरा उसका स्वामी नहीं हो सकता। मनुष्य अपने (कायिक, वाचिक, मानसिक) कर्मों को भली–भांति वष में करके (प्रज्ञा) द्वारा ही वह दुलर्भ स्वामित्व को प्राप्त करता है। इस प्रकार हम देखतें हैं कि दासता, शोषण और दोहन के विरूद्ध मानव को अपने आप पर आत्म विष्वास करना और अपने पैरों पर खड़े होने तथा समतामूलक समाज का निर्माण करने के लिए भगवान बुद्ध का यह उपदेष एक मूल मंत्र है। इस प्रकार बुद्ध ने विष्व शांति और अध्यात्म चिंतन का मार्ग बतलाते हुए मनुष्य को सुखपूर्वक जीवन यापन करने का षिक्षा प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष :– मनुष्य अपने सुख एवं दुःखों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। वह अपने अज्ञान और मिथ्यादृष्टियों से स्वयं अपने लिए दुःख और अषांति का उत्पाद करते रहता है। अतः बुद्ध द्वारा बतलाए गये मार्ग का अनुषरण एवं चिंतन करने से ही उसे वास्तविक शांति और आध्यात्कि सुख का अनुभूती प्राप्त होता है। इस तरह हम देखते है कि भगवान बुद्ध के धर्म का मार्ग सिर्फ वर्तमान को ही नहीं बल्कि हमारे भविष्य को भी प्रकाषित करते हैं। आज भी यह हमारे देष में ही नहीं विष्व के कई देषों में बौद्ध धर्म का अनुसरण करने वाले अनुयायी हैं, जिसने भी यह धर्म को अपने जीवन में अपनाया है, अध्यात्म चिंतन किया है, वह आज भी करूणा, प्रेम, मंगल मैत्री, अमनचैन, सुख, षांति, का जीवन व्यतीत कर रहा है।

———:::———

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :

1. धम्मपद, यमक वग्गो, गाथा संख्या–5
2. धम्मपद, बुद्धवग्गो, गाथा संख्या–183.
3. धम्मपद, बुद्धवग्गो, गाथा संख्या–276.
4. धम्मपद, अत्तवग्गो, गाथा संख्या–160
5. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, डॉ0 गोविन्दचन्द्र पाण्डे, उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान, 1990.
6. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, पी. वी. बापट, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2010.
7. मज्झिम निकाय, हिन्दी अनुवाद, राहुल सांकृत्यायन।
8. अंगुत्तर निकाय, सम्पादक, द्वारिका दास शास्त्री।
9. पुग्गलप"ञत्तिपालि, सम्पादक, डॉ0 वीणा गौड़, न्यू भारतीय बुक कारपोरेषन, दिल्ली, 2000.
10. बुद्धधर्म के उपदेष, भिक्षु धर्मक्षित, महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।
11. बोधि वृक्ष की छाया में, भरत सिंह उपाध्याय, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1992.
12. बौद्ध साधना और दर्षन, ब्रजमोहन पाण्डेय नलिन।